पोथी नं ५

कैय्यट महाभाष्य

१२ श्रीगणेशाय नमः ॥ [illegible]

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥

पुमस्त्रे ति । कश्चिन प[illegible]पल [illegible] सूर्य [illegible] तिक [illegible] विविध [illegible] रपिवत [illegible] गुणा [illegible] सम [illegible] [illegible] तत्र [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

त्य कर्त्वं योगा द भिन्नतर क मिसुच्यते तत्र पतंग न द्वावेत त्रि विस्मर हणात् तेष भावकादि मक्रिवि धानेपि कारकनिम त्रिगु क्रियाकारकयो वेचं पेत्सनि सामानि नात्य प
पदानि प्रक्रिपु मुक्त योग त्र हणात् द्वाचान् कानि कतीप पाधानत्वा त्र न पार्श्वतस्य प पत्र्याने पिन दोषः पोभाव पायो व मुग्न भानुप्रम मनप न्मनी व क्रमात् सम हीतान व
गोप कार्थी भावेने ला व्विते प्रव त्र पु कृम प र नी सम स र्षेष हर्णेन कृत मेतितवापिन दोष ॥ सम स र्थो नाम किं त पु का नत मे पुक्त न्ना मह द स नु सि भाना सिं गा द्विम तं
ता हा दि कर स्य पुत तं ति पद विचि ना हे तस्मा भा वा प्य स्मा ना द समस र्थ प्र स पा प्र ने न नरा ल्प नि नि पं द क पा नि प दि का र्थ प रो भा त प रि कै ने ड क र्म जा इ प्य दा

त ः स्व स्व र त्र प्य विम स र्थे प ह णा नि पु त्र स्य ह णा नि व क र्क्षा नि म त्र ति त्र त्र र म मु कि स्पा म र्थ न ना हा ते षु कु र स न्न र्थ पे न्मा यां पन ः स्या स र्थं
पु ा भा ष्य पी त स नो या न न्म भा व क र ति प द ॐ अ न्या म स म र्थ ः वं श ह ती ती प न्य स म स ह स न्ने को स्ं प न हीत ः तत्र एक र्थी भाव ः स्या म र्थं प शि भा षा ने मि प न्नि स
च म [illegible] ता ते क म वृ त ॥ ए व म दि के नि द्व कर्त्वं स म र्थ प्र ह णा क्रि य ते वृत्ति स्वं वं न क्रि य ते व्य क र्त्वं व प्र न क्रि प ते स म र्थ नो प पा षा दे ति क र्द व्यं
न क्रि य ते [illegible] ए व ण म स र्थ रि ति [illegible] नु ग म्य ते स म र्थ ं कु भ का ले न गा क र त्ति स सं ग म्य ते इ स ने हि प्र स्प [illegible] नुता नु सम र्थ दुसा पः ॥

ना न्या नि प र वि च न्ता नि का दिष रो नु नि भ कि रा प्य ना न क र्म णः प द नि वि न्ना दे त स प्रि भा यो म प्या ना भा नि दो प का न नु ने ता प दि कु भ का रा रु त्र म र्थ मि ध्या
प्रि प्र यो ग ति व स र्थी प त : क र्म क त्य ा त न न म चे ति भ व ः [illegible] प द ता न व रि ति प पा स म सा स र्य ॥ स म र्थी र्ना मा भ न्व नि रो न स म र्थ व न न क्रि प ते द ह ना पि स म
र्थ स्त्र ह ण स मा स र्थ प्र स पा नि व स र्थ क र्व व मि स र्थं प्र ति वि भा षा न नु मु न्न ना द्वा ष्य र ना नो क भ त द्यु प व द मि ति म ह ला र्न ता पा ः क यो म स प स्य
सा न्त्र प न्ने म ति म स र्थ प ा भा षा न्या पा र्थ सं व ॥ ॥

राम
२

४

अपे विाप्र भानपर्पंनुयोन मुतेत्ता न्न मेि वातेपच्यापतृम्मनेन मा मर्पंनत्ति ॥ सीपतोन(हस्तत्तो ममपर्पमलाम पंचवनुनेन्न न्तुं पा पंतो भना(विपदर्दि सोमाभ्न पंतोप्तता
पना पंनाह स्यान म पंप न मा मा [illegible] सुन्मुतो [illegible] नितप पत्रिम मा मये ता ना ते मु सीप तेत मा [illegible] नी न मान विन्म ताः [illegible] पीः मनने घः प किमाप्ती (नीप
तहति मममु तदरसु कोापमे वितः न्नम तिम ने हितो पी त मात्रे (त्र ताहि वि म मयी ता हितो माता मा [illegible] मानाय विमनुम्नतुममा मर्म ता पमा त ॥ मान पंक्तु मापु
सप्ताम ममदन मा मा तिपद्दिकम ता मानत ॥ वि न पं न पं पनुने म मा मम द ता म निपमा पंमानु प मात न मा मु न मम मा तिप दि कम ता न पे व [illegible] मपन मा(हिना पंी
भा मा मान्ने (वितोतापता पंमना प्रोमेनो ॥ पि नेम तिमो पमना ता ना वि भ क्र पत्नुर्ना [illegible] ने मातु तो ति सि मी पांता पं व तन्न म ना पी तिम मा मनः मा त्त [illegible] हकु पं हति ॥

अप्म मम पंपनुलोकिम पंा न सा मि हितो पा क्रिता विकि मम पनु तो न्मह श्रितः न्यात क्रिता मममर्पंमह तो किम पं म तपाहे त्तुहतकाया निवातिवि मा कि तो गुरु
कुतोतह मात त्ततो पातें नेता पं मगुता न मन न न पा तो मक्कुनको तो कुनाता हः ममपंप हतो किमपंा तिम भली तोकु म पा [illegible] ने पातनि मुम मन ना नातु पंतो हर
घो पंमनुपति हित मनुप्ता त सितनः तो हितो मु मा हितो मम पंचमर तो किम पं म हितो तो म्मा प्तात हरत भानापे न मी म पना सक म पंह मतु मम ता मम पो म
म पंप्रहतो किम पं ता नन तेमान हेनोम पं त्रु वर त्रम पतो न्नात ॥ वकीम्मुतेत नाता मनु हयः ता मुल्या त मनान्नः मम मम पं म हतो किम पं ता मा पंतो मा तु नमपु
म पंप्रहतो किम पंता तन तेमात हेनोम पं त्रुवर त्रम पतो न्नात न ममम पंपहतो किम पं कु ना नो दवद होता सेमु तो हः पिन ति पामा मा त [illegible] किमम मा तो पितम
ह घो देव दत्नम्म ॥ ममम्मी हो [illegible] ता: हको तो न मम पंपहतो किम पं कु ॥ पंप्र हतो द हक मा [illegible] पन्नतिम हककु पं त्रितहति
[illegible] मात मा ता मन रामम नत्ता ॥ छ ॥

अप्र रसेना न मपप मतकि प मा मा म पंा वितिप म्न्क पप मनवत्ता त्रितत ता हु ॥ ताः ममम मा ता ॥ ममम [illegible] मात ॥ अप्र पापित्र माता मम मा मे व तो मम्र हतितदे पोत्प
त्रिहह तिम्मा ता ॥ अप्र पापित्र मा तो पता नो ममममः मातात न मा मा ता पदे वि सी पमा न मना ने म म पम प देन पाता ॥ [illegible] मानातु ममा मेसने ना त पापि म हो र मा तोत नह ममम मा तो वि पुतो ममहता मा
मामः पमदेवं मतान पं त्रितो मह ता क पंचित्र हति अप्र ता ने हितो पतिम्म ता म नि तिप मम मा मप सनेनात पापि म ता रतो मम तिम हरा ता पहरा त मममा मन्ना ॥ तो तो ता रुक मा ता ता पम्मा
म तोत ह ति दिप नेम मा ने कतो मा पा दिहः ॥ नितप देन मम मा ने कतोमन्न हतितदि हितो पेत मुह दे कतो मम तिम हरा ता प पर त हृ मम मा न हा तो तो ता न कु पा त ॥ पम्मा
क तो ता [illegible] प्रपे मा न्न ता न ह ह दो ने न मप्र नी हु: न ता मा तो म मा मे कतो म पा मा पी ति पाप मि नाम ह तक पातो पप मा मि नं पा न ता मुन्नम न ना न तो ने गोप ता (हुको मा नं तुना
सोतिमम मा त्रोत्रम मा ता ॥ तत म्मा नो ने मा ता ॥ अप्र हो न (हुतो पा ति मह छ हमम म कत त्यात ॥ पम म पेत ता

१०

नत्याप्रवर्तते ॥ इति प्रथमाध्यायः ॥ [illegible] ॥ पुनः प्रसिद्धं दर्शयति ॥ [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥ इति [illegible]

नन्वप्रवर्तते [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥ १ ॥

नमः [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३

[illegible] ॥

[illegible] ॥

६

इत्यरण्यवचनमेवदर्शितमन्त्रास्तोदयतिपरिक्षाये [illegible] मिनिमन्त्रितेति ॥ स्वाध्यायस्वाले के नैषप्रकारके लोमकापें त्वादिशोभास्त्रामान्यप्रयोगाः इतिलिंगदर्शनात्
॥ समुद्रा याये ते ॥ गुरु [illegible] समुप [illegible] दत्त [illegible] देव दत्त समनुसाये [illegible] मन्त्रदपयं समीपं [illegible]
[illegible] समुत्थाये न मंदं [illegible] गुरु [illegible] ॥ [illegible] पुत्रं तेन द्वतास हेतिा [illegible] नामानों [illegible] नमानों [illegible]
नो त्रा नी नाम मे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वं [illegible] ॥ [illegible] सर्वः [illegible]

[illegible] दर्शयेत समस्त मचं भवती [illegible] गुरु [illegible] इति नैनं [illegible] ॥ मन्त्रनिनम [illegible]
सा पु [illegible] मन्त्र [illegible] इति नं प्रयोगा । देवदत्त [illegible] गुरु [illegible] देवदत्त [illegible] ॥ [illegible]
समसा [illegible] गुरु [illegible] इति नं [illegible] ॥ [illegible]
॥ [illegible] इति ॥ [illegible] देवदत्त [illegible] गुरु [illegible] देवदत्त [illegible]
[illegible] देवदत्त [illegible] गुरुः [illegible] ॥ [illegible] गुरु [illegible] देवदत्त [illegible] गुरु [illegible]
पुः ॥ पुत्र देवदत्त [illegible] ॥ [illegible] सम [illegible] ॥ [illegible] देवदत्त [illegible] :

[illegible] पुत्र [illegible] ॥ [illegible] इति नं प्रयोगा ॥ [illegible] समुदायस्य [illegible]
[illegible] इति ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] इति ॥ [illegible] ॥ [illegible]
सर्वः [illegible] ॥ [illegible] दत्ति ॥ [illegible]

७

त ब्रवीति पर्यन्तं नम वति ॥ सा नाना विकरण मसम पं च दि निवत्त मान [illegible] ॥ [illegible]
वि शा ष ण [illegible] [illegible]
॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible] [illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥

गज्ञमासोगमकरति॥ आत्मा दिवृदमा पुरुषोमकत्वाभिम तोन्नो केप्रपुम्नते॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥
[illegible] ॥

१ अथी तस्मिन्निति ॥ अथं भावः ॥ पुरि सानुनीकृ मर्यो ॥ यानं तत्सामन्ये कार्यो मानेनार्थे दं हति यानान्त दं देवि मार्य यो कृत्वा प्रमाप्रयोगो ॥ अथ पामि दूतान्नाम
मात्र मिकार्थी मात्र स्यन्नाभावि के तु नार्थ रस्या दिर यो निर्देशोत्त र्यक ॥ अर्यो नादेशा सादि ॥ अन्न तु मिनु तु सा दावि विमान ॥ अन्तर्न्नितिप नं सादि प्रमन
नागेन्त्रर्म मानले श हृप्रवे धानुपरामा दं योग ॥ माननेरन्न पीरनार्म मते ॥ पुवं तम नेक प्रयपरार्थ यर्त ॥ तव्यं हद्धो देशं स्मिति ॥ दाव्रम मना पि नाराव मले

अथे तस्मिन्ने कार्यो भाकृतो नित्र्यपि कं स्या माविकेश देश्यं मि यानं अपहोषि द्वान्न निर्ध स्याभावि कपि स्यादानुतनतत् न्यर्थो नारे शमातान स्पर्यो ॥
आदर्यते ॥ कं यं पुनर यो नादेश न्ने व तु याम्नार्थो अदिरयंत्र रनिापरा रभावानाथ्वे कमपपरार्थ ॥ वार्थे दं दं ॥ अयत्सेर्व कृतिनि देहे रविनेतस्य ॥
र्यो देश अनित्य माव तत्तपतेयोग हानाम्र यर्थेचु अमनिवि पावर्नी मिद्दतेनान्या स्थानेन कि पतेन पाषा कृष्ये हक्षारे रिगाः पे पाः अमर्ते दममनेव ॥
देव निस्मानतत्स्य तत्थ्व पाषार्थे द्वमम ज्ञानिमित्रने गानाम्यानें कि पते मवमिहा पिनार्थे मः सदं दहमामः अयपरार्थे फलत्व हुडीदि ॥

दर्शनीयः ॥ पदातुल्योल्नोकप्रमिद्धार्थानुसारे नव हुडी टिंहं हानि भावने पदस्यपरार्थ अनेकं कर्तेतेन हद्धी हिस्तरामि ॥ तरानार्थे दं शानेनापि राजमदः ॥ अ
र्थे पुमिलि नि दानामामिति अमिनि विशेष्य व यो कापतास्य तोन्यतरस्यांग्रहणानुवर्तनार रति कृत्ये नकर्म दलाभि भातस मप्रमी कृत्या ॥ एतदेवत्रमात्य मते नं
विग्रहंदेश्किल्पाप्यापूरविधुत्या लरीत्या तेना पादीपते ॥ हमात्सदनियम मार्थम हत्सस्य ॥ अपदेसमाप्येभां ते समास स्ववृत्तानेन निर्दिष्टो ॥ ॥

किंघ न ॥ ति ॥ प्रकृति प्रसंगो पदेश नत ॥ भवतं आत्म प्रेरणा यो देशान्तवि ति भावः ॥ [illegible] पुरा [illegible] तो ना [illegible] प्रमर्यीनादि [illegible] ॥ अन्य था
गो ॥ [illegible] प्रम [illegible] ॥ [illegible] ॥ तदेवं [illegible] पुन [illegible]
[illegible] प्रति [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ तत्र [illegible]
ने का पं [illegible] ॥ प्रसमा

किं [illegible] प्रमर्यीनादि [illegible] ॥ [illegible]
किं [illegible] प्रसम [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] प्रकृतिः प्रकृस [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

१० सांना ऽभ्येतानापिजा [illegible] प्रतिमकाति निर्दिष्टेपतो यैन त्यानुसारयोद्द यमाआभि मापिनः स्मृति [illegible] प्रकारणा [illegible] विशेष संप्रस्थोन [illegible]
[illegible] हृदयवता [illegible] स्मृत्यैन [illegible] क्रमसा [illegible] प्रकरणात् [illegible] सर्थः ॥ [illegible] पयमर्थान लामंतरति ॥ [illegible] पर्वदेवता [illegible] स्वा तापरि [illegible]
पुन्नाशिंतलमान तायंत ॥ [illegible] पाक [illegible] निर्दिष्टं परं [illegible] सर्थः ॥ [illegible] पुरुहूतन [illegible] ताप्रनतम्र्व ॥ [illegible] निकोदेवेतिता [illegible] चैते [illegible]
द थौप्राप्येतेत यागर्हति आव ॥ [illegible] पीति ॥ [illegible] वमा सुमं का निरामामगा [illegible] पोजरवग्ने प्रयोजनाभि सर्थः ॥ [illegible]
नानर्थकं मेनेति ॥ [illegible] पिबा यो [illegible] विधमन्ना [illegible] भविष्यती [illegible] ॥ [illegible]

अमत्र [illegible] पर्यारे [illegible] प्रथमार्थान [illegible] सायंता [illegible] अंतरेण [illegible] पुरोंवहूवोर्थाणमेतेन [illegible]
कोचैः [illegible] स्यापनितीत [illegible] विद [illegible] प्राकत पुरत [illegible] इति [illegible] =
तिमपुतेगुरु: [illegible] अग्ने [illegible] सम्यावमि [illegible] नानर्थकं [illegible] =
[illegible] तेना [illegible] विधर्वे [illegible] नेन [illegible] १६
[illegible] पुं [illegible] नर्थायः [illegible] अपामेतत्रिवृ [illegible] पार्थो [illegible]

नो [illegible] ॥ [illegible] लामाल्तिति ॥ [illegible] सेषु देवता ॥ नतु [illegible] पुरुधमाति [illegible] नरात्रपुमर्थ इति ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] एवं [illegible] कुर्वतीति [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] स्थाभिजानीश्रुतिरेषोपदम [illegible]
[illegible] विधिसिद्धमिति ॥ ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

३०२ अन्यथा इति॥ तत्र शब्दः सामर्थ्य निमित्तं पुरुषार्थं विशेषणम् भावमस्यापेक्षते [illegible] ॥ न च तस्मिन्निमित्तं विशेषस्य [illegible] निमित्तं तेषु [illegible] यथा निमित्तं [illegible]
निवृत्ति पूर्व [illegible] निरुपपन्न भवतीत्यर्थः॥ [illegible] विशेषणं पुरुषार्थं [illegible] इत्यर्थः॥ [illegible] पूर्व इति॥ अन्यथा [illegible] इति॥
[illegible] इति॥ [illegible] तस्य सामर्थ्य [illegible] इत्यर्थः॥ [illegible]
[illegible] सामर्थ्य [illegible] इत्यर्थः॥ [illegible] इति॥ [illegible]

अथवा अन्यथा [illegible] भवति॥ [illegible] इति [illegible] भवति॥ अयं [illegible] पूर्व इति [illegible]
[illegible] भवति [illegible]
[illegible] पूर्वः [illegible] पूर्व इति॥ [illegible] भवति॥ अयं [illegible] पूर्वः [illegible] पूर्व इति॥ [illegible]
[illegible] सामर्थ्य [illegible]
[illegible]
[illegible] इति॥ ॥ ॥

[illegible]॥ [illegible] इति॥ [illegible] इत्युच्यते॥ अन्यथा [illegible]
[illegible] इति॥ [illegible] सामर्थ्य [illegible]
[illegible] इति॥ [illegible] इत्यर्थः॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१२ कल्पेरिति॥ यद्येतौ बाधसामर्थ्येन तन्नेकाधी भावइत्याह॥ [illegible] त्रितयमप्यर्थ प्रतिपुरुषाव बाधकतयोर्न्याय्यमपेक्षा नत्वेभवतीति प्रसङ्गः। अर्थ [illegible]
प्रमाणान्तरात्तौ यद्येतत्प्रयोगसमानाध्याहार्यः [illegible] तेऽत्यन्तमपि तदा [illegible] क्रियानिमित्तं तेन तद्गाढमनुपपन्नम् [illegible] उभयप्रमाणत्वं [illegible]
तत्सत्त्वे सत्यतः क्रियाकारकयोरिति॥ [illegible] नत्र [illegible] त्रयं सुखता [illegible] क्रियाद्वयम् [illegible] [illegible]
कर्तृत्वमित्यर्थः॥ अथ [illegible] यथा [illegible] तेन [illegible] सामर्थ्यात् क्रियाकारक [illegible] अस्य [illegible]

नत्वम् [illegible] क्रियायाम् [illegible] पयुज्यते [illegible] विशेषणात् [illegible] अस्य [illegible] सामर्थ्य [illegible]
हेतवः। [illegible] प्रयोगहेतुः [illegible] प्रयुज्यते [illegible] सामर्थ्यमित्यर्थः [illegible]
पुनः [illegible] प्रयोगहेतुः [illegible] प्रयुज्यते [illegible] सामर्थ्यं [illegible] सामर्थ्यं [illegible]
र्थ्यमितरेतरम् [illegible] हेतुः [illegible] सामर्थ्यम् [illegible]
[illegible] सामर्थ्य [illegible] सामर्थ्यं [illegible] सामर्थ्यमिति [illegible]
र्थः [illegible] क्रियाविशेषणत्वेन [illegible] तथा [illegible] इति॥
मो [illegible] तयोः [illegible] इति॥ ॥

[illegible] इति॥ [illegible] सामर्थ्य [illegible] प्रसङ्गः [illegible] पयोगेर्ति [illegible] सामर्थ्य
[illegible] क्रियापि [illegible] सामर्थ्य [illegible] इति [illegible]
[illegible] सामर्थ्यं [illegible] सामर्थ्य [illegible]
[illegible] सामर्थ्यं॥ ॥

अथैतस्मिन्निति [illegible] कार्थी [illegible] नाम्युपपद्यते ॥ तत्र [illegible] विशेषोपसंहारेण विशेषणासीनां प्रसंगा[illegible] नेन प्रतिपाद्य [illegible] पदानन्तरं कर्तृ
[illegible] नामान्यं [illegible] कार्यपदेन
[illegible] ॥
[illegible] ॥

अथैतस्मिन्नथ [illegible] कार्थी [illegible] । तत्र नानाकारकाक्रियापातपुष्प [illegible] ॥ अथैतस्मिन्नथ
[illegible] । [illegible]
[illegible]
[illegible] । [illegible] कारकं पं
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] प्रतिपाद्यते ॥

६०२ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आरभ्य त [illegible] ॥ नाना [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

बृहद्देवत [illegible] ॥

२३ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मेत्र्याद्यनंदस्यातिकिं पुनः [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ॥ ॥

[illegible] ॥ ॥ ॥

समर्थाधिकार इति ॥ [illegible] ॥ अधिका-
र इति ॥ [illegible]
॥ [illegible]
[illegible] ॥ समर्थाधिकार इति ॥ [illegible]

अथ किमर्थं पदविधौ समर्थाधिकारः क्रियते । पदविधौ समर्थवचनं [illegible] आनन्तर्य [illegible] । पदविधौ समर्थाधिकारः क्रियते ।
[illegible] आनन्तर्यमात्रे [illegible] कार्यं विज्ञायेत [illegible] समर्थाधिकार [illegible]
[illegible] समर्थाधिकार [illegible]
[illegible] समर्थाधिकार [illegible]
[illegible] समर्थ [illegible]
[illegible] समर्थ [illegible] असमर्थ [illegible]
[illegible]

[illegible] समर्थ [illegible]
[illegible] समर्थ [illegible]
[illegible] समर्थ [illegible]
[illegible]
समर्थ [illegible] इति ॥

के०२ [illegible] ॥ [illegible]
३ [illegible]
॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥

...मना । पिकरणे पृथि(ति) । के चित्... द्रव्यं परत्वं प्रतिपन्नाः केचित् ... [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
। द्रव्यपरत्वं ... [illegible] ... ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
इति ... [illegible] ... ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ... ॥
[illegible] ... ॥

प्रत्यक्षमप्रतीमप्रहति ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥

२८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

णामुपमनुं नमसंतावीप्याता॥ चित्रपपटस्यैहमार्थ॥ अथानेकांतविभक्तिनेतेप मनोंभवसंसाविप्यतीष्यते॥ तदानेकस्य हर्णोनु अपेक्षस्वानितस्तर्योवित्तापते॥ तिन
यहेनांसमाप्तः एतद्यति॥ बहुपु द्विन्नाभावानित्ति॥ ननु नवहुपुद्वीनिपेते॥ तपयावेशोप्राप्त णानोहानानयति॥ तन्नवहुवचपत्कोतेपुप्लुतस्यपो धायारेका दं
दर्शता॥ वेति रपत्नाशयो द्वितीया॥ दंदंहसमुस्तपत्पत्ती॥ या॥ द्वियाति॥ नेपदीकायपत्वापिवहुपुद्वीलः तथापिवतनुर्थ्यंसहदिवत्सितवपुर्ण्णकेसशप्रेणवनाये

योश्रोतहंदेष्वनेकस्य हणोकर्तव्यं॥ वार्थ्यंद्वंद्वोनेकप्रितिवहत्वोटहोपिपयपाप्पातहनरान्यश्रोभवद्गायन्नाशाहति॥ नैपदोषः अत्रापिद्वयोर्द्वी
योःसमासोभवत्यति॥ द्वयोर्द्वयोः समासइतिचेन्नवहुपुद्विन्नाभावात॥ द्वयोर्द्वयोःसमासइत्यनेवतत्कन्ना॥ किंकारणंनहुपुद्विन्नाभावात॥ ननवहुपु
द्विन्नभावि॥ नानंस्पर्शविग्रहः घटस्यनय्योधत्वात्स्वदि॥ अपत्ताश्च अस्तिसिंतद्विर्यविग्रहः कथित्यते॥ लीलाअनय्योपञ्चप्लक्षन्यग्रोधप्लक्ष
न्यग्रोधा॥ त्वसिः अपत्वसिरपत्या रोलत्तम्पयो श्रीनत्वसिरपत्या श्रोनप्लक्षन्यग्रोधप्लक्षसिरपत्याशाहति॥ होतापोतानेष्टोद्गातारः तार्द्वनविग्रहंति
होतापोतानेष्टोद्गातारतिप्रयोगः॥ नंवेतत्रैवंभवितव्यंनपरिवर्त्यहः क्रियते होतापोतारौ नेष्टोद्गातारौ होतापोतानेष्टोद्गातारौ होता
रौ होतापोतारौ च नेष्टोद्गातारौ च होतापोतानेष्टोद्गातारः होतापोतानेष्टोद्गातारः नक्तिष्टोपि

पर्थ्यंदतिद्वयोश्चार्थ्यं कृत्यसंभवात्स्मासकतानीतिप्रवदनेनपविभाषते॥ एवंविग्रहदतिद्वयोर्द्वयोःसहविवक्षापविक्षति॥ ननुपुनरव्यतुर्णांक्रियर्थः ॥
तत्पाठनेष्टोद्गातारदतिप्रदानहर्नामस्तलक्षवैतहतत्पादपदनकर्मिनानंप्रतिपद्यति॥ द्वयोर्द्वयोः सुमसमासेक्रियमाणेसर्वद्वंद्वेविन्नायसैकाभावनद्वंद्वाये
पन्न नपभाष्यकारवर्तनप्रामाण्यादुक्तानगद्धावरीयः अर्थ्यानेप्राविश्यहणत्वम्भिपयार्थंतानाता॥   ॥   ॥

समकालं तम तिथेः पुत्र ति ॥ द्वयोर्द्वयो [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

2 प्राप्तौ ति॥ यथा तु द्वयोर्वृद्धौ [illegible] विप्रलब्ध [illegible] न [illegible] सम [illegible] ति [illegible] वृद्धौ [illegible] ति [illegible] नेति॥ वृ [illegible]
सन्धौ वृद्धौ कृते द्वयोः [illegible] द्वि [illegible] पूर्व [illegible] द्वयो [illegible] वृद्धौ [illegible] दि [illegible] ति [illegible]
[illegible] तु [illegible] वृद्धौ [illegible] निमित्त [illegible] ति [illegible]
[illegible] वृद्धौ [illegible] ति॥ [illegible] प्रतिषेधो [illegible] हेतु [illegible]

[illegible] भवति॥ [illegible] प्रकृत [illegible] नित्य [illegible] पूर्व [illegible] ति [illegible]
[illegible] प्रति [illegible] पूर्व [illegible] तस्मा [illegible]
[illegible] प्रतिषेध [illegible] प्रकृति [illegible] प्रवर्तते [illegible] प्रतिषे
धेन। नैव [illegible] प्रतिषेधः [illegible] प्रति [illegible] प्रकृति [illegible] प्रतिषेध [illegible] ॥ ॥

[illegible] प्रतिषेध [illegible] हेतु [illegible] न [illegible] ति॥ [illegible] ति॥ [illegible] एकवृद्धौ इति [illegible]॥ [illegible]
[illegible] द्वयोः [illegible] हेतु [illegible]॥ [illegible] ॥
[illegible]॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२ प्रसंगः॥ नंमस्याविति॥ अधिकवर्षे वर्षेरसेनम थानामसेनमपेंअधिकम्यापक्षान्यायतेजेना अधिकापक्षिनें पीतपमेतिप्राप्तम्प्रव मनतिकर्नेशेति॥ अधिक
पक्षिपूर्वापचर्गणामि मितिवर्षेपूसः अमपूजनेकमन्यमत्पंरतिव हुशीदि ममेति॥ वेलेपवृत्तिनाअत्र हुशीहिकाम्नितेचनो नजे चीनितेशपनः व हुशीहि गान
न्नपुनर्वेपक्षिलम्भिः वचेअहुशीहिप्राप्तोति॥ प्रसाख्यातरति॥ अत्र अधिकम्यापंनम्ना अधिकापक्षिनें पोणामप्रतिवानमवेदमविष्यति॥ अत्र अधिकम्यापमनायेव

विसेषसोमविष्यतिपान्नेनपेतः अधिकशतवर्षेरविरहाम्प अधिकपक्षिवर्षेरतिमसामांतःप्रापोति॥ ननु प्रकरणोतंख्यापाम्तसुत्रशलोपसंख्या
नंनिष्ठित्नापूर्वाभि तिजैपरीपः अत्र यारशलेदंता किंपुनः कारणमत्रपारेसेदंतत्र रहमाम लोकज्ञो मिति॥ व हुशीहि संख्यानर्हेप्रापोति संख्य
यान्यमासन्या हरा विकं व्योःमें लोपरति॥ मसंख्योसंख्येपवर्षे विम्पामः कथं प्रदेविप्रहः कारिष्यते अधिकापक्षिनें पीतामप्रत्येतिविधायानाहेंत
योगः प्रसाख्यापते पाप वेंलाप्राप्तोतिबहुप्रेपसमयोगःप्रसाख्यापते॥ अत्र शिष्यः संख्योनरपद्संख्येय साधिप्रविनादिति॥ प्रसाख्यानेनेतिमन्नयोग
मं संख्येयसंख्येयपदर्शेप्यामनः तेनैवेदिनः कृत्पते न व क्ति समासे नर्पोत्पवसलेसिमवेत्पहवत्पवहुपाहिपूर्वानमण्यामलो कचंपोवहोपरपोगःप्रसा
ख्यापतेपंन विप्रहोति अधिकाप क्षिनें पीतामप्रत्येति॥ प्रवृत्तसुंख्या अधिकवर्षेनविवर्षेनविवर्षीनमिति॥ यी मविकचेमावतारे न वो गःप्रसाख्यापते॥
अत्र पंन विप्रहोति अधिकाप क्षिनें पीतामप्रत्येति॥ अधिकशतवर्षेलुनकिपुति॥ कर्मणोक्तवमसतः॥ इति सिद्धिशीचंप्राणमप्रप्रथमेपारे प्रथमसमाद्धिकं॥

मर्दे घाति॥ अत्र अविकृत्यापाक्षपणाम॥ प्रकृतद्वक्षमिति॥ इति त्रिविधवेदशास्त्रीन्यायविसेकपोलामितिरई गानसंख्यानुव्रतिन्यासहेत्येपस्यान्यपरापेंना तल योगः
प्रसाख्यायते॥ अधिकशतवर्षे मिति॥ अधिकंगतंवर्षाणांपस्मिन्निति विप्रहेन हुशीहि कतेतहिता वोंझ्पदेविव सुकलेसमासोन्तीतातलेप्राप्तोति॥ अत्र सुदीहर्मं
न्यते॥ कर्मणोत्वपलक्षं॥ पुकालेन्पानि॥ अधिकशतवर्षेगाढ़ःअपपुरोगा स्पों दपल्पः॥ रस्तु इति सिद्धिशीचंप्राणमप्रथमपारे प्रथमसमाद्धिकं॥ ॥

सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे ॥ सुबिति किमर्थं [illegible] आमन्त्रितस्य [illegible] पराङ्गवद्भावः स्वरे [illegible] नान्यत्र [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे ॥ सुबिति किमर्थं [illegible]
[illegible]
[illegible] आमन्त्रितस्य पराङ्गवद्भाव [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible] आमन्त्रित [illegible]
[illegible] आमन्त्रित [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

३५

१०। तदन्यथि तस्य हर्षाद्वेदिति। ना हा सूचितं [illegible] प्रतिष्ठितं द्वापरांतम इत्यतीयर्थः। [illegible] तत्रविहितमपि [illegible] सर्वे प
[illegible] प्रतिनिमित्तनाभावः। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पितर्मनुता पिता पितरः सामंत्रितनि पार्वेमानु रात्रं तस्मा सर्पमहनादि सेतरण्यनुरात्रमे वमनुमवति उ त्रिसिद्धि त्रौ मी वोगतिः पाञ्जीमत्वा मं तो दानो पाहि तो
न्त्र (धिकृत्य) प्राक् प्राप्यान्यात्रमन्नामि वत स्वा मकता मिसेतवपुनर्हातमेव मेव तत्तत्सर्वत्र ॥ अनन्यवीमावस्तु प्रतिपेयादिविषये दतिपेयादिविधि
यतिामतत्रैन पराजन्वे पनाः प्रयो तत्रविसितदनप एन्मुक्तामका ॥ अन्यम याको पतर्य मपत्ना मात्रा स्वकल्पमेतत् स्यात् । यर स्तुना च प्रतिनिति द स
निसिद्धाति च (दिकं नयायप्र समपर विप्रत्तय पलनहोन प्राति प (दिकंसत्ता निवेद्यो नर्य स्तेद्भुक्यौ ति तत्रीय प्रतिपेधाते त्रायकना । तेभी मतिद्या एव हत्तीपत्ता

पापमपि छंद सिः पा पचि छंदसि पर्दे स्थां तत्रवती ति वक्तव्यं प्रतिपितर्य तो तत्र ने ना प्रतिवानुदित दिकः पृषो वद्र दिति दर्श का अव्यपःप्रति
पि च स्रो अव्ययमात्रो व प्रतिषेधो व्यंजनः उ त्रे दर्पा मानसी दो धीयाना । अनन्यवीभावस्तु । अव्ययीभावश्चेन्तेवद्भ वां हत्रमामनाह्यमाधा
प्रि धीयान प्रसत्यधी मा ना । अव्ययं विप्र दीर्घत्वार्थारतो कि पतो ॥ हर्वधारयं निरयते दर्शकमरणं तुवलोपार्थं व्यकृत्व्यरसोकिर्य न सप
लोपो मान दि हिं । पदमेनारुदं ॥ नाना च हर्व तेकात नाना नवाकर्त संकिंवा यो तु मुदं तेव्हेतन्नारा न्तु वं तेकोनः मयो नवहो योय दवि प्रतिप

वहावेन प्रातिपदिकन्प्रवया त्वपो भातुप्राति पदिकम्पो हि तिन्न कृत्स्नं लेना व्यापदेतो न तित्रहिकर्तवे यथा तंग नप्रहायाम धर्मारूर्धितं कान्तरतिप
प्रा नद्वीव विधमलासत्तान व्हा वहत्र तोप तंगदि तान्प्रतिकंविणानाह्य न्तोसेवनः एततत् द्वीषुवतमेवेविसहर्तमरतिप्र वंतकामं एवमसंगनह्रा
वो तंगान्नानतु प्रातिपदिकामर्दसर्वंन प्रातिपदिकं कतर्दहिः ॥ अरव्याय प्राय नक्षेम विपदां व दन्ते वंततश्चत्प्यांत व द्ववति पदोनास पृष्टे केतेप्रा
तिकमेवतिर रात्ताकःस्त्रीमः प्र प्रात्तेवाप्रसपत्नद्भाते नेभामसमोनिधि तेत द्रूपोदचत्वामं ववित्तमहरेशस्तेतनस्वं तेकांत नविमसन्धः ॥ विरोद्धाख्नेवा

[illegible] मंत्रितं पशुमस्ता [illegible] देनसंसंसृत इति सुवं तोग [illegible] विदीपुतेमनुप्राप्ति सांगवद्धा [illegible] प्रातिपदिक [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] विनिमित्ति [illegible] कपद्धा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible] सुनो [illegible] सुनो [illegible] प्रतिकंत [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पदं [illegible] ॥ १॥

[illegible] संज्ञा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥

प्राक्कडारात्॥ प्राग्वचनमिति। अत्रावधित्वेन गृहीतं नाक्षेपक्षोणावधेरव्याक्षेपः समासस्त्वेवसंज्ञिता वा द्विधिकारोक्त यथा प्रत्यय इति अनवकाशत्वात्समास
संज्ञायाः संज्ञांतरैः समावेशो भविष्यतीति प्रश्नः। संज्ञानिरूपणमिति। समाससंज्ञायाः संज्ञांतरविषये अनिरूढिर्यथा स्यादिति भावः। अन्यथा एकसंज्ञाधि
कारस्य पर्याप्तः स्यात्। ससां समाससंज्ञायामिति। स्व। एतत्वादेवाधिकारेण अव्प्राक्कडारादित्युपादानमसामर्थ्यात्साग्रहणमावर्तते तेन माकस्मात्ससंज्ञकाद्ध्रुवं ति
समासास्तत्र यथा अभावादिसंज्ञका इति समावेश सिध्यति। अवमव संज्ञा इति। समाससमस्ता यो रूपाकस्य चित्समासस्यकाविरसंज्ञे सेवमुक्तं। समाससंज्ञापी
ति। सततत्वा तो तथाविषयत्वं समावेशः सिध्यतीति विस्पष्टपटुरिति विस्पष्टपटुरिति विग्रहः। विस्पष्टादयः प्रवृत्तिनिमित्तस्य पाद्यवादे विशेषणानि मतं द्रव्यस्य

प्राक्कडारात्समासः। प्राक्वचनं किमर्थं। प्राक्वचनं समाससंज्ञानिरूपणार्थं। प्राक्वचनं क्रियते समाससंज्ञाया अनिरूढिर्यथा स्यात् अक्रियमाणे प्रा
क्वचने अनवकाशाः अव्ययीभावादयः संज्ञाः समाससंज्ञां बाधेरन् तामा बाधिषतेति प्राक्वचनं क्रियते। अक्रियमाणेपि प्राक्वचने यावता अ
नवकाशा अव्ययीभावादिसंज्ञाः कस्मादेव न बाधंते क्रियमाणे हि प्राक्वचने सत्संज्ञा समाससंज्ञायां तो। अवयवसंज्ञारम्भं तेतत्र वचनात् समावेशो भवि
ष्यति। समाससंज्ञाप्यनवकाशा सा च न ताः बाधिष्यति। सावकाशा समाससंज्ञा कोवकाशः विस्पष्टादीन्यवकाशः विस्पष्टं पटुः विस्पष्टपटुः व्यक्तं पटुः व्य
क्तपटुः नैषोवकाशः एषा ह्यावार्य्य सृष्टे लीलायते नैवावश्यकार्यं प्रवर्तते नैव समुद्रोप्यकार्यमपि भवतीति येनैव वचनात् च यवकार्यं स्वरः क्रियते तेने

तिविस्पष्टमिति नपुंसकत्वं। अतएव मुख्यसामानाधिकरण्यं नाधिकरण्यं नास्तीति तत्सुनुषाभावः। यथा शेषस्सेत तस्यामधिकारस्तत्पासहसुपेसपी
ति समाससंज्ञा प्रवर्तते। अवकाशं निराकर्तुमाह। एषा हीति। शीलेस्समाने भवाप्रवृत्तिः शैली। अव्ययभवकार्यं विहपर्वपदप्रकृतिस्वरः समुदायकार्यं समा
र्हसंज्ञा। तत्र केकुमारी। वास्याये यांतरेणापि सहसुपेसेतस्मिन् लक्षणत्वं सिध्यति। काककृतालीयमिति। समासाच्च तद्विषयादिति सूत्रसमासानुवादेन छविधाना
न विशेषणं पदन्ताम्मायास्त्वेवार्थस्यान्यपदार्थत्वाभिप्रचर्यवद्दुष्टो हि विधानादुपमानशब्दस्योपमेयपमेय वृत्तित्वादन्यपदार्थो भावादीव दुष्टो हे रभावात्सहसुपेस
ने नैवात्रसमासः कार्य्यः। तत्र काकमालशब्दौ द्रव्यसहचरितामां क्रियामां पांवर्तते काकस्यागमनमिव चैत्रस्यागमनं तालस्य पतनमिव दस्योरुपनिपातस्से

६०२ [illegible] अत्रापीति । [illegible]

[illegible]

[illegible] अत्रापीति । [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] अत्रापीति । [illegible]

[illegible]

सहा॥सहचसुनोमति॥सुपेति कर्तायासहा यैमा[illegible]पतिरु दो पत्नेतिपुपेति प्रत्र: [illegible] सुपेभासम[illegible] [illegible] तानुम योगाग मनेन मंदं [illegible]
वैसमास सं[illegible] [illegible]
त्रम[illegible]समा[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
पत्र सम[illegible] [illegible]

सहस्रपा॥॥ [illegible] इति
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] सहस्रं हरीन॥
[illegible] सहस्रं हरीन॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] सहस्रं हरीन॥ [illegible]

सुपः समासो भवति। योगविभागश्चेह पक्षे अर्थः इति सर्वत्र समासो भवति। अनुव्यचलदिति। सुपिति किं? [illegible] इति वाक्ये [illegible] समासः [illegible]
। [illegible] समासे [illegible] सुपो [illegible] वाक्ये [illegible] भवति [illegible] समासो [illegible] इति [illegible] इति [illegible] विशेषः। [illegible]
ता [illegible] इति [illegible] एवं [illegible] इति प्रयोजनाभावात् [illegible]
[illegible] तस्मात् सुप्तिङोः [illegible] समासो [illegible] इति [illegible] इति [illegible]
[illegible] प्रयोगाभावात् [illegible] इति [illegible]
[illegible] प्रयोजनम् [illegible] इति [illegible]

एवं [illegible] प्रयोजनं योगविभागस्य [illegible] इति योगे योगविभागः कर्तव्यः [illegible] सुपः समासः [illegible]
[illegible] अनुव्यचलत्। अनुप्राविशत्। तत्र सुपा सुपा समासः [illegible] इति [illegible]
[illegible] पूर्वपदप्रकृतिस्वर [illegible] समास [illegible] पूर्वपदप्रकृतिस्वर
[illegible]॥

[illegible] समास [illegible] योगविभागेन [illegible] इति [illegible] योगविभागेन समास
[illegible] योगविभागः [illegible] इति [illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] समासे [illegible] विभाषा [illegible] इति [illegible]
[illegible] समासात् [illegible] इति [illegible]

अस्य पी॥ किमर्थं मि॥ ला पवादेवाल्लं ता करण त्वान्या-न्याद्वे तर्केभ्येति प्रसक्तः अत्र च पर्वं न होति ॥ न दृष्टं लोकारणे ॥ व्यपकार्य्यं प्राप्यते ॥ अनन्यपमस्य यमिति अ
न्यपकार्य्यं लाभार सर्पः ॥ नन रूप्यमिति ॥ तत्कारणेनु स्त्री ॥ [illegible] पचा ॥ प्रयोजनमि [illegible] नं क्रियतं पतति [illegible] कृपतामन्यथं [illegible] कार्यमन
पयमस्य मनमनुमा स्यतदल सेफा ॥ पदं पदार्थं प्राधान्य [illegible] पिकमत दन्च यं संदृष्ट्या [illegible] प्रतीसाक्षा नुस्मारपदार्थं प्रधानमं [illegible]
हादन्य पदार्थ प्रधानता ॥ अन्य पे ॥ दृष्टमन्यादि [illegible] पप्य संज्ञा ॥ पैत्रात्य [illegible] दिशेषणा ॥ [illegible] सम्प्र [illegible]
प्रतिपत्तिरिति प्रसक्त ॥ सपुत्र [illegible] पती स पुत्री [illegible] प्रयोग पुत्रा [illegible] पतिरेति संप्रयोगपत्तये [illegible]

अव्ययीभावः ॥ किमर्थं मनहतोल्लं नाक्रियते ॥ अनन्यपर्थं लाप पादि [illegible] तात्पर्य अनन्यपमस्य पंभवतो सप्यपीमाव्य ॥ अव्ययीभावो ऽव्ययपसंसोमवतो
सेतन्न [illegible] वृत्तिः ॥ अन्यपदार्थे [illegible] इदम् [illegible] समासः ॥ सपुत्रः [illegible] नैव [illegible]
क्रि [illegible] पदार्थप्रधानः कश्चित् [illegible] पदार्थप्रधानः कश्चिद् [illegible] पदार्थप्रधानः ॥ कश्चिद् उभयपदार्थप्रधानः पदं
पदार्थप्रधानो [illegible] पदार्थप्रधानो [illegible] पदार्थप्रधानो [illegible] पदार्थप्रधानो [illegible]
तो ॥ अन्य [illegible] ॥ ॥

[illegible] समासः [illegible] पदार्थं [illegible] पदार्थ [illegible]
भवति [illegible] पदार्थं [illegible]
[illegible] भवति ॥ [illegible]
[illegible] सपुत्र [illegible] ॥ [illegible]
मुदाया [illegible] पते ॥

यथा॥ अस्माद् रूपरतिकिमर्थं प्रितिमापेन्द्र्‌नार श्रामर्थे वत्रिः मादृरूपएवना पर्व प्राप्त निर्गो न प्रप्रत्येक्षि [illegible] पथादेनद न्र इति प्रिमनुसमप्पना गवा
पन्कैगो नप्रपन्न प्राधान्यात् यमान सप्तोपमेये प्रति त्रिसुमापे [illegible] नासमामः प्राप्नोति अत्र समाद्रूपरतिप्रकपत्रसूप्प मा इरूपा चंलातप्रक्रो [illegible] सर्वित समपथा
दात् मपमाद्रूपेश भिन्नो सर्वः। अस्मद्वेदितिपा न्यमन अर्थ [illegible] मादृ सत्रानपपि समवीयाप्प नेर्यिमपद्रूपामु पल्लकुणी। तत्र योप सायुद्धा यो नवार
पितना च त्रिप्रिल्लेसर्वः। प्रतिपद्धतन्न मामर्थो प्रतिपाद्यार्थमद्यपमि त्रिपन वंगौवि दे समामत्सादृरूप प्रतिपेधो चंलाद्रूपार्थमपमनुप्रतिनामुदित

यथामेकच्छ॥ ॥ अस्माद्रूपरतिकिमर्थं पथादेद रज्ञ सपाप तदनः अस्माद्रूपद्र [illegible] न्यतोत तत्रे हंत स्थित्र तिपथाजाक्रियपपाद्रत प्रिति
किंकाभांतवे सप्पयं प्रकृपयुसने मानतत्र प्रयद्रपसन्ने प्रतिपदिकंथी पमावतिस्पेद् यदगो। अप [illegible] प्रकाद चत्रैपाल तत्स्य इतोकृत्य
अप्रपत्तिपर्यो प्राप्रोतिमाद्रूपर्द पत्रो प्रतिप्रतिषेध सूत्रन सामर्थ्यान्न भविष्यति॥ ॥सुप प्रतिन्याभाष्ये॥ ॥सुब्विति वर्त्तमाने पुनः सुब्ग्रह
णं किमर्थं अनुपप्रतिषेधे तदन्त [illegible] प्रिपथाकृतामापप्रति। श्रीदनप्रतिपमप्रति॥ ॥ ॥

साद्रूपेवर्त्तते। नैष दोषः। अर्थं पथाशत्री करोत्यनुसन्धः प्रातिपदिकं शीघ्राय तो अतिप्रकायवस्त्रै यातत्रैमानुप्रतिगुरामं प्रितरस तः। अयप प्रियव
प्रिति। अप्यपय दृहामलं हमसरिश्च यः। पार्वेदवेपारमा इसत्रपाद छान्तो यप प्रवेशः हीत गत पातु पातसम आगोष्पनपापेन राम्पे मद्रर्थः। अपपा
प्रिसुमप्रमतायो ह्यरत्नात्पन्नारागरीपाम प्रम हार्यवामपातो [illegible] त्रिसकिद्विषये सन्नप्रमव तार्गेना आतोवतिधर्मारविनुदेति अत्र पप्रपेवार्थ समा
सःस्यात्॥

अ॰ रू॥ न ती यो ता इ ति॥ विम र्श्न ता नि त सा पै प्रेत द्रु रूं स्या प्रा श्री ता सि श्चा ति॥ य का दी नां न तें म क्रि या यां क र्तं स्या दि स्या द्रुः॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अ॰ रू॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]

५५

के॰ २ भीत र हि यी ते नु भीप तीत नो पर्व त्यानं न कर्त्तव्यं ॥ ५५ ॥ किमु [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] कर्म प्रवचनीय पुर्के पंचमी विभक्ति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

तो प्र [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

पाठे॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
प्रधान [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥

भा० कौ० २ नदीभिश्च । अर्थविशेषमनुपादाय पर्वपदोत्तरपदे इति निर्देशः समासोयं द्विगोयमानो द्विगोपि तत्पुरुषः [illegible] चाव्ययीभावः [illegible]
२७ [illegible]
[illegible]
तिभावनकपरान्यपदार्थं प्राधान्यं [illegible] प्राप्त्यादि पर्वपदार्थ [illegible] उत्तरपदार्थः प्राधान्ये
नैयथीभावसमासः [illegible] इति प्रत्यर्थ [illegible] विशेषणानं पदं वदति [illegible]

नदीभिश्च ॥ नदीभिः संख्या समस्यते अन्यपदार्थे प्रतिषेधः । नदीभिः संख्या समासः अन्यपदार्थे प्रतिषेधोऽव्ययः । द्वीपवती कोदेशः [illegible]
न सीमायां [illegible] पर्वपदार्थ प्रधानः कश्चिदुत्तरपदार्थ प्रधानः कश्चिदन्यपदार्थ प्रधानः कश्चिदुभयपदार्थ
प्रधानः पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः [illegible] उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः । अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः उभयपदा
र्थप्रधानो द्वन्द्वः [illegible] पूर्वपदार्थ प्राधान्येन [illegible] तत्पुरुषे [illegible]
[illegible] अन्यपदार्थप्रधानसमासः [illegible]
[illegible] अन्यपदार्थ प्रधानसमासः [illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥

वैदिकश्चो प मुद्रा वितर्पा रिहरति प पपी तिनहनु पा स्व वो प माणा दयति । हत्वा पी तिप्रा प्रोक्ती संतं । अप म प्रभिपा प्रः । [illegible] पन्तो हा पद व्यमि [illegible] मा सा [illegible] प्रो
व मनुदित मा हं त्रो पं इति पक्षी तन्त्राप न प वं पद हा प्य मान र्प रति प्रा प्रोक्त चन्त्र पीमा कृ । एवं तत्ती ति [illegible] त्याद प कादन्या ये ना र्प द्विगुमे वचा व तेन हुकी [illegible]
पु ल्ना श्रु स्व तं । शे प म्न हर्षी व तत्र प्र सा न्मा तं [illegible] कार्य कृ भा शेषः [illegible] तर रति प दिप्रमा हा र प्र हतो न क्रिये तत प पुरु त्वा द य ना त द स्ने न न्या प ना मं स
मा स्व फल्ने कात्ते कति समा सं वा धेत । मा हो तु पान्या दिशुः [illegible] सो व पनो ने सो पो पी मा स्य हा म गो [illegible] इति [illegible]
ति नपुं सक लं वा प सत जो द्य म ओ अन यो [illegible] मा तीतः [illegible] यो गादि भा गे न क्रि य तेम ने प्य [illegible] स र्प इति तत्त्र नु येम मो [illegible] ना रे कृत्त रीस त्र नम

प पुष्पत्रे [illegible] ज्या म ज्ञो पं ड स्य ते अ स्य प दा र्थो [illegible] प दा र्थो [illegible] वहु वी हि मे वि प्य ति । [illegible] प प [illegible] प दा र्थो [illegible] ते [illegible]
रा र्थो वि तु [illegible] भावः [illegible] स्य वी भा व [illegible] हुव्री हि [illegible] हु व्री हि र्प वि प्य ति इति [illegible] ना म [illegible]
दे । प द [illegible] तु न ति [illegible] म मा म [illegible] इति [illegible] हुव्री हि [illegible] न रो घः । न रो [illegible] ती भा [illegible]
[illegible] भा व र्प [illegible] । स वै से कन रो वा रे ॥ द्विगुः ॥ द्वि गो [illegible] प्र [illegible] पे ति । [illegible]
पं ना [illegible] द्विगौ वा ॥ [illegible] हा [illegible] ना मु प सं [illegible]
मी [illegible] मी ॥ [illegible] द्वि तो [illegible] हु वी हि [illegible] द्वि तो [illegible] न वं ग [illegible]

[illegible] तं । अ [illegible] मी भ [illegible] तु पं [illegible] हा [illegible] त्पु रुषः ॥ [illegible] सा [illegible] इति [illegible] तत्पु रु
नि [illegible] गु णं [illegible] भावः [illegible] तत्पु रुष [illegible] सः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] तत्पु रुष [illegible]
[illegible] इति [illegible]

कें०
५

दुर्पे-कृतणे याग । भाष्य कां एतदुत्स यं स्कन्स्य प्रसा एचात्रात कृ स्वयंपोष्य च्चे बेध्य स्र रतित स्पर्शे मेमो न्न-चोक्ष द्विता द्विभि रि तिम्पः कुर्वद्धि तः काय प्रते ने माषि तं
र तिव हू श्री रिह एति व चि वाक्रिता यो श्राप्ता र चरिकप्य सा भे रा भा वा ते लु ह चो तमि दे च हत चं : अ हो न पा लि म्पा र तिम : कुर्वद्धि तः कृ पं ते नव हो न मिल चं हत
भा कृ । खमप ति सं ग्रा तो चदर्ते हर तिपस यं का तक ते । कुः ततः स्थित पतिग तेः स माले यं न विवे पः अ ती तैर हमि तक सा मिव्य यो निम्न प गतो ह्रैं त सु ह पद्म ति
या या द्वि लि गता भा व्यम न्न ती ता स्युत यो र हो न ततिवि घ्या त मा या प न्न मोर हो ने द्वि ती या नु प म र्ग ह तवि घ घा त सर्वे प द प्र कृ ति लद्यी मा चित्त द हु श्री हो तु पर्वे पद प्रकृ
ति स्र ह ता भा म्यं । पद नु जा ल्का न मु ला री नि प न्ने प सा मित सात या पिन ह श्री ह त सन्न प मोः स्मा मंजा भा वेः न हु श्री हि कृ त न्ना दि ति व हु श्री हि ता न प स्य मा चित

ता ति व हु श्री हि कु त लो ता ह द्यः कृ व द्वि तः कृ प्य म ने न चि तं भ नृ स त न न हु श्री हि ता ति द्वा अ ही नो द्वि ती या स्वा व च ना न यं सं ना अ ही ने द्वि ती या प र्वं
प दं प्र कृ ति स्व रं भ व ती ते त त्सु श्री व न न प्र न न पूर्व कि का र्णो च हु श्री हि कृ त न्ना रे न । ना ति ल र ष्ठ सं ग त स्य जा ति न्नु प्र स्यं ग त स्य प्रा प्तौ ति । स्मा म गा तः अ र्ग ण
ग त ह ति मा ति का ल स्य लो हि प्यो ना च्छा द ना त क्तो ः कृ त मि त प्रति पत्र ति न्नु नी मा द्दि पु रा कृ त स्त मि द्दं प च्छ त मा भात हु ति तत द्धा ला दि क्षि ति व स्पा मि
। ह म्रे मा ता र पो प्र ति र्थ्यं । त न न्त चे पं शे भ व ति नि हु श्री हो मा ति प्रमा लो ती नी त न्ने म्ना चि प्र ति त म्यं प न्ने प द प्र कृ ति स्वर न्नु ना वि त सु ह च लो प ति पर्वं प द प्र कृ = ६ =
ति स्वा न्ने न्ने वा या लि भ दः यो हि त लु क प्य मा भ त न त स्य हृ श वा ता नां च हु श्री हि स्त त त स्तु ह च न्ने म ति हो न मा मी दो स्था नां न हु श्री हो म ति ह कः स मा सो द्वि ता

त्याद् स्पर्धः न्ना ति ह्यु स्र ता या दि व हु श्री हि न्वा कि पं न्ना ल मा ति का लो सं तो हा न्व ने प्रा प्रो ती स्पर्धे न हु श्री हि या री का लो सं पा दि हा ति त त्रे ति । न न्ना त र ति न्या ग प्र
या स्य वा ता ता दि घु ति व स्य ते ते न पर्वे हि तो हा त नं प कृ प न्ने प द प्र कृ ति स्वा न मि ति स्वा र सु प म ति द्धि । ह म्र र ति ष्ठि त ग त प ति त सा स्तां न ते श्रो ही ने द्वि ती या ति न्न
कृ यो प्र ति न्ना पूर्वं भ व ति । त स्य तु प च्चा पा ह न्न चे ति व हु श्री हि रे वा पा ह न्ना लि भ्र ह र ति ल श्री द्र णा त ति त स्य नु प न्न हो ने द्वि ती ये ति पूर्वं प द प्र कृ ति स्वा र न हु श्री हो मा
ति का लो सं तो री स न्नो द्वि सा न ति ति ना जा ता दि च्छि ति म स न्या म न ॥ ॥ ॥

पचंत होति । तत्र अन हृद्री समाया कष्टा स्थितहसा सान हीन दिव्यो ते तिष्ठ एवं पदा पुरुसत्वं भवति निष्काम च्यान नारि सा क दात्र स्वकृपत्रा सूक्ष्म सनकुनावितन्कूपंन हृ
द्री दि निर्वं चन मंतोदा सर्नं । अन्य दि [illegible] मे नुलाप के न [illegible] सर्वोति [illegible] व दिक्ष [illegible] दीक्षा [illegible] सत्यम [illegible] ततिव हृद्रीदिगा
त अत्मा नृ साध्य का [illegible] स्मत्र क [illegible] हुल तो पदाहृ [illegible] न व हृद्री समानं मन्म मान आ हा नैतात दि । [illegible] हृद्री [illegible] विन्मय ; पुराण
कना [illegible] हो सो [illegible] हृद्री हि [illegible] पत्नी न [illegible] नमोज [illegible] दृशमेन [illegible] विलाप [illegible]

पचंता हैं [illegible] दसात पत लु कथं [illegible] हा पपसा [illegible] : मम [illegible] [illegible] ध्येयं [illegible] हृद्री [illegible] सत्य [illegible]
साप मे प दी नेत्र [illegible] हृद्री [illegible] तत [illegible] हा पकृ [illegible] नमः [illegible]
[illegible] विशेष [illegible] ॥ प दृश्य तेव हृद्री [illegible] हृद्री [illegible]
[illegible] हृद्री [illegible] हृद्री [illegible]
[illegible]

अथ यो [illegible] तत्पुन पवि [illegible] हृद्री [illegible] सर्वं [illegible] किं [illegible]
[illegible] हृद्री [illegible]
[illegible] हृद्री [illegible]
[illegible]
[illegible]

६०२ एवं स्फुरमानः [illegible] ति गाढ शक्तिः [illegible] भाष्यादि [illegible] [illegible] मनु [illegible] [illegible] तिर्य [illegible] [illegible] ति
[illegible] नापानु [illegible] [illegible] पुरुष [illegible] [illegible]
[illegible] सु [illegible] [illegible] मा [illegible] [illegible] तः

ति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रसङ्गे [illegible]
[illegible] प्रसङ्ग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] इति ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] इति वचनं ॥

तस्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] इति [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] इति ॥ ॥

मितिकृतत्वाभावादप्यादिना विनमनिषयत्वे नि निर्दया वानिमि। गौ संसंविदन्या घटयो गाद्यावद्युमि सितत्कृतमम त्रिरूपान छट्रहस्य गावयत्नोन मनुतिप्यो
दिगुणानुत्ता द्रव्यमपि पत्ते मृत्वानुमान स्पष्टरति शुक्तरात्रु न्यागुणतत्त्वे। नथा च उद्ररक्तत्वं दावयादौदयविधिप्रियं द्व्यमारे तिना नोगुणवत्त्वेन। किंपुनरिति
दृष्टान्तापले घटतेनमादेव मिसा हीकैवसगुणा वानिनामनमा नो नेष्ट्यो गुणो पनमतैन द्रव्यवनमलक्ष्म द्रव्यवतननत्वात्। गुणावत्त्वेनोन भवति निमन्ना। गुणो नेति स्त्रर्थं
नवममानासंमनान्हृणावतवैनमदिव्य तिनक्षन्तवयत्र हगाद्यतकालप विश्व हणत्र गुणान्तल्लसते प्रतिगुणोपमज्जे नद्रव्यवाक्ये नागन्तव्योऽन्तःतीत्युचेः। के चि
पुनः। निनिसुनाक्तव्यं चेसंबंधनो पाता चेपा। स्वाम्ता चेद्गामिमानं नमसंमवती। तेप्रकृत। श्राष्टव्यात्तहेत्रिष्य चेप्रे देमगारेः पेरास्यादप्यापि केवलत्वाद्युमसामिः नाप्याप्त

व्यातत्कृता चैनगुणोनेतायतानि। शुमोपमवंति देमतिपक्षत्नमयहेतांक्यो मिस्मिन्नष्योग्गर्त्तंरवंमचानितापेतगुणाम्नु क्तत्वात्गुणावत्त्वेनेति। ननुयपृथ्न
चंगुणवत्त्वमनःसत्वद्रव्यवतनःसेपपृतेःन्त्राप्नमेवमत्र चनौषाःगुणवत्त्वमेव्योमनुपोत्र। मिति तद्यथात्मनुन्त्रःगुणाःकृतसः सर्वदुःखेगुणाम्नरते। व्यपर्याय चं
सत्कृतावंयहतोनमपविशिष्टिकृत्वापाःत्वेत्नुमानमर्थी। अमाम चैष्ट मौननमद्विष्यति। दृष्टान्तः पतेन पद्दपिति। तत्त्वा नाचेष्वक्तीर्थक्त हतोनाक्तो
यावेक्तहतोनान्तीप्यत्नुमानं। चैक्त हणात्मनर्थ कत्वर्थगति प्रैवन्नुमानात। कृतौप्यान मात्रे चैक्त हणात्मनर्थ कैम्मंक्याणो। त्वरचेतामिदंदुवमातृ। अतैरंगायव
वेद्यत्नमचैतामिनं विष्यामिनि देत्याविमिन्नतत्त्वोयाचे मिदं गौथिरन्म चैवम विनिद्रैहः कर्त्तम पतिवेतहतो याचे मिदं तो पिकर्त्तं अ द्याना। कृतौ मातद
चैक्तता चैनेति क्तमोतनशविवक्तचयोनन सव्ये। नायमनचेति दैत्य विनाहं पौत्रोगंरदंनिदृं त्पत्तेमतियद्योगोगवीनाविभागः कादिप्यतेतत्वौपातेर्तनेन
गुणात्वत्त्वेनमप्रमुते। तत्वः स्त्रचैनान्मर्ये शाच्चेनवक्तो पानममस्तुनेपाःनार्थः वमनापीः हिप्यार्थःपर्दम दतमामोनार्थंहरमचैष्टहतोनक्तसैवम ददीति

तक्तलोवानेक शक्ति यौ तात्पयोगमेदेनानेकार्थं संबंधदर्शिमात्कः।पदक्ति हीति स्त्रयाविधिकृतकन्योत्तं गमवतीयमानसमाहत्तवर्षः तकृतोतिक्रियावद्राक्विमितिमा पराद्रापु
दृशासवनु विषयं वादस्यानचो। नाममाप्ता भो नस्तत्त्वं गत्तोगिन्नतकृत्वात्था चैत्याम दिशाग दिसचंः। निदर्शमितितदहिनिमम चैत्यस्वप्रयाणविषयदिद्वि प्यव्या चैत्पुपाला
नविशुचैः। योगादिमाप्रतिता तत्कतेतिकृतौ पायापः एवं दमेलनुक्तत्रचैने त्रिंपरपष्टमपिरसिनाक्तभेदः संप पतेन। मकर्त्तृत्वात्वाद्विस्त्र चैनुपादान्वनसमाप्ता चेमिति
भावः। नसेन्निमिहतोनषलानान्रात्कृतगुणास्थिरव्यवहतोत्तकृतमलोहिताकोलम्ब्यादेशान्नपातिकतोतिक्रियातत्त्वायघायाचेपसे तादें तपदोनोपमनवरपितानुवा

पर्व ॥ पर्वमन्त्रे [illegible] पंश शेन स मास म्यमासि तन्तारि हा पं [illegible] ते ना मि सं [illegible] मानं तस्पी [illegible] पर्व मन्त्रे [illegible]

पौर्न मा [illegible] पौर्न मासे [illegible] पं हत्यो [illegible] मास [illegible] दर्शा [illegible]

निर्दृ [illegible] दर्श मास [illegible] पं [illegible] दर्श [illegible]

कृतेत सुनुयेतु [illegible] पी [illegible] मविष्यति [illegible] पन्यतेतु [illegible] पं [illegible]

तदा पर्वं [illegible] पं [illegible] दर्शा [illegible]

मासेन [illegible] दर्श [illegible]

पर्व संदर्श ॥ पर्वादि [illegible] पं [illegible] दर्शा [illegible]

न पं [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सेन पर्व मन्त्रे [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तु प्रवं [illegible]

कृतेतिव हृतस्य [illegible] पारानेवं [illegible] इति [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥

[illegible] ॥ ॥ ॥

[illegible] ॥ ॥

इतरपदलोपप्रसंगान्नाप्युपपत्तिः ॥ षष्ठीसमासश्चेति । अत्र व्याप्तिसिद्धे [illegible] पञ्चम्याः [illegible] समासेऽन्यथा [illegible] पुरुषार्थ
पोनरुक्त्यं [illegible] पञ्चम्याः [illegible] पुरुषार्थ [illegible] प्रतीयते पुरुषार्थ [illegible] पदार्थस्य [illegible]
[illegible] मानार्थं [illegible] अत्र [illegible] तदर्थं [illegible] हेतुः [illegible]
[illegible] पुरुषार्थे प्रसंगादिति पुरुषस्य [illegible] भवति । [illegible]

पुरुष्टीसमासश्च पुरुषार्थः ॥ षष्ठीसमासश्च पुरुषार्थः समस्यते इतरपदस्य [illegible] पुरुषः [illegible] पुरुषो । [illegible]
[illegible] समासे [illegible] । किं कारणं समासे [illegible] समासे द
[illegible] समासे [illegible] पुरुषार्थे प्रसंग
[illegible] प्रतीयते । कथं पुरुषार्थ [illegible] पुरुषार्थ [illegible] प्रतीयते इति । तत्प्रसंगात् [illegible] । तत्प्रसंगात् तदर्थं [illegible] ।
[illegible] प्रतीयमानार्थं [illegible] भवतीति [illegible]
[illegible] पुरुषार्थः [illegible] ॥
[illegible] ॥
चतुर्थी ॥ किंतु [illegible]

[illegible] प्रसंगात् [illegible] इति भावः । [illegible]
[illegible]
[illegible] प्रसंग [illegible]
[illegible] ॥ इति [illegible] पुरुषार्थ [illegible] ॥

चतुर्थपादचतुर्थानां [illegible]

[illegible]

[illegible]

प्र [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ननाक्तिविषयः स्यात्यत्र प्रासमाया पर्यावेक्षति विषयेन भवतीतिविवाक्षितं प्रासंगतो यो संसिद्धं समानादिकरणत्वा विषयेभवने नात्मन्नार्थं शस्त्रः प्रयोजनमानो
ए तहीति नुं प्रमाणपदप्रवृत्ति स्मार्तेक्षते पर शब्दस्यान्यत्वे अर्थ शक्तेः स्यात् रूपेण क्रियते तेन सम्भवति प्रयोगेनभवतिसंनु यो अभ्यासेन तेन ती
दे तोनार्थं शब्देन विग्रहणामाव अर्थविशेषाभिमतरूपेपपः शब्दस्य प्रयोगः इत्यर्थः । विदितं चानुयी ते न तत्व शतक्रियते तेन पर्यायेन भावित्व क्रियार्थः प्रयोजना

त्रि इत्यपदविग्रहो व हुव्रीहिः वपुष्या शोभनेन्द्र प्रसज्य स्थाप्यते । निवेशितं इति हरिहरशर्मवित्सानरूपो वक्ता संग्रहे एतदुक्तं हि तदर्थ विग्रहेण पद
स्यार्थं शब्देनार्थे रूपः क्रिया नेत्र विधिरूपेन भवति न नेवा हि विग्रह विशेषेण विग्रह सम्भवति । अयं विग्रह तत्र नाभि दीभवति तत्राहि वर्तमानं यथा तत्र भवत्य । यो विग्रहे
भावः क्रियाव्यक्तेनानुयोगवत्तेन सह समासते । तत्र तत्त्व प्यर्थे । तत्र यो यो तत्र पदार्थ सत्ता येन शब्दस्यार्थे गौणे भवति । इत्यादि तत्र हि प्राप्नोति तत्र तावदस्य तं ज्ञा
त्रा सत्वादिनामिति । अन्यार्थ प्रवृत्ति तो पद नित्ता दर्थ यत्र तत्र ये प्रकारान्तरेण न चतुर्थीमात्र विधि । एवं देशस्य लक्षणं अर्थोक्तनि । क्रियार्थ कृत्वा आपकं प्रयो
जनी प्रकारेण सामान्ये हि तत्र रूपस्य उभयोगार्थः न या नाना प्रथक्तानां समासः पदे हि तदर्थ पादनानुयी ता सूत्रस्य तेन नानुपूर्वी मात्रं न तोहि तत्र प्रयत्न हेतुना सर्व
च हृदयवति । इत्यादिवदर्थं योगः पदस्यार्थं गुणस्यादेशः प्रयोजितिपदपातुर्भावप्रसङ्गात् । यानन्तरं नेति न विशेष्यते । इत्यादिविहाय प्रयोगो विधाय
यो । तत्र प्राप्नोति । एवं तत्र यो नार्थ प्रवृत्ति तो पदानि प्रकारेण विकल्पो वे समासः तत्र नर्थे योगः पर स्यादेव अन्य शब्दस्यादेशो भवति । अन्यक्षसिद्ध
इत्येवं दर्शयति । विनाश तत्कारोपि । एवं तत्र हि दृष्टा योगे पृथक्त्वा निबद्धावादर्श भावे प्राप्नोति । तत्वार्थे वक्तव्या । अन्यस्य यत्र नानि नसमासो तत्र
व्यः समर्थलिङ्गतानां । न पुनर्लोपः इत्युदाहरणं प्रत्ययोग्य यो हस्वत्वतो इति कैयटानुयी पातादर्थे इत्यादिपदेशितादर्शे यो ननुयी । अर्थे शब्दस्य प्रयोग
ता नु भविनत्वं । एतत्कार्यं नाम प्रयोगदृष्टि । सम्मानोपि न तदृनं प्राप्नोति । अवयवानामत्र सोभविष्यतिमरस्य यातस्य वर्जिते तत्र वक्तव्यो तेन नेत्यादि । अर्थि
गम्यते । शब्दो काच्य पदार्थो नियमस्तदनुयी

कल्पते तेन रूपाणां सहस्रं पदार्थ इति वैन प्रथम विषय प्राप्तिकुवेत यो वक्ति। कुर्वन्ति विनपद् पादि दर्शितार्थ इत्यत्र शतं नाम पर्कं प्रकृतिविकारभाव
इत्यत्र निसंपरीक्षणः तदर्थ सम्भवतीति प्रकारं इति प्रदेशीय वशाद्द्वयोर्देशः क्रियते तत्रस्थानिवद्भावान्न योऽन्ते विधिरुद्देशाच्च नोत्तरादेशः प्राप्नो
ति । समासेन प्रतीति । पद्यानुपूर्वी नस्यार्थ शब्देन समासो विधीयते नर्थे तत्र योगं गम्यत्ते न भावः इत्यभावः एव नास्ति । अन्यस्य पदेनोक्ते कप्रयोग प्रक्रिया यो या
ग पद प्रसङ्गे तत्र पदं तिष्ठति तेन रूपाय तिङ्गमिति सम्यग्कृत्य स्वभावाल्लौकिक प्रयोगः अप्यालम्बनविशेषात् अविद्यमानहीनार्थः ॥ ॥

पंचमी॥ मेषेणेति सकृपग्रहणादन्यान्निमित्तान्तरमिकाम्भः व्याख्यानादर्थग्रहणेन कैम्यम्स्यानारस्यानावपि प्रसंगः॥ समर्थो ग्रोगादिति तित्र कन्यानिति॥ नह्युक्तम
मर्थग्रहणमिति पर्याप्यार्थत्वान्न तद्वचनेन तत्समासविधानार्थता॥ एतत्पाठकस्मेन व्यसनः [illegible] किं [illegible] स्यादितिभाष्यान्नद्वचनं निर्देशादिति पत्तौ

पंचमीभयेन॥ अथ व्यामिदमुच्यते भयेनेति॥ भयभीत भीति भीभिरिति वाच्यं॥ वृकाद्भयं वृकभयं वृकभीतः वृकभीतिः वृकभीभिरित्यपर्याप्तं हायपनि
र्गमनुगुण्यमिति वक्तव्यं॥ वृकभयं यथापनिर्गतः अपर्मेणागुण्यः॥ समर्थो ग्रोगादि [illegible] हायपथ्यात्पाठः निर्गतः स्त्री [illegible]
तिकितनःस्त्री किन्व ति॥ नन्वर्दवृक्काया वनकाया॥ अदृष्टमूलनिर्दृश्याच्छैतादि [illegible] तेषा॥ यां तेणासु पंचग्रहणं पाते
तेषां पंचग्रहणं कर्तव्यं॥ रहादिपथ्यात्पाठः [illegible] तेषु रक्षप्यते करहस्तेपोनाममध्यातां पर्यंकाकाः [illegible] नमस्कं [illegible]॥ [illegible]
गृह कृत्वा निगमनादिदेति [illegible] कृत्वा [illegible]॥ कर्तृकर्मणोश्च कृति [illegible] कृत्वा [illegible] विपि
च्या [illegible] कर्तृ [illegible] करोति॥ तत्र [illegible] वक्तव्यं॥ [illegible] रससु बनिर्दे॥ रहपपुण्य [illegible] तानि [illegible]
॥ तत्र [illegible] रससु बनिर्दे॥ पञ्चहणं कर्तव्यं॥ [illegible] वा॥ [illegible] हणं॥ [illegible] लाभेन [illegible] तेषां [illegible]
स्यौ॥ करहस्ते [illegible] वाच्यवतत्येन कुलाः [illegible] वक्तव्यं [illegible]

[illegible] तेन [illegible] स्यादिति॥ उपमानो

पप्रेयभावेनकार्यं प्रसिद्धिःस्यात्‌रूपं समासांतविधावस्यर्थः ॥ कुतो नित्यवर्त्तिहोपाविनिवृत्तु प्रेक्षतिवकृत्वाद्वितियत्नेनु कृताधुपपत्तेतित्र्यकर्मतत्ताकर्मणामप्रा
ङ्पतारस्मत्रापिप्राप्तिअप्राप्ता ङ्स्यप्रयोगदर्शनात्‌गोत्रस्याप्यर्थे समस्यत्वेनसवयोगवाधिकृ ह णादसर्वदेः रूपे ॥ अव्यतीभावेनन्वनुलोभावपत्नादिति मात्रे

दिति ॥ तेषेसप्रम्यंतकोनेसहस्रभवप्रस्तस्ककृचतेमत्रतेप्रागितिकेनसमनुलोमेनगुणमात्रेणनप्राप्नोति ॥ तेषेगततिकारकपूर्वंउक्तं ॥ किमुक्तं ॥ कुद्गतिग
तिकारकपूर्वस्यापी ति ॥ पात्रेसमितादयश्च ॥ किमर्थं कृत्कारणकस्यार्थः पात्रेसमितादयश्च ॥ कुंभापत्रपात्रेपात्रेसमितादयश्च ॥ पूर्वकालैक ॥
तत्पुरुषसमासस्यापीभावीनभवति ॥ एककालनगरागरी ॥ नदीभिःसंख्येति प्राप्नोति ॥ तत्पुरुषश्चिरतसमासः पूर्वपदार्थप्रधानः कश्चिदुत्तरपदार्थप्र
धानः कश्चिदुभयपदार्थप्रधानः पूर्वपदार्थप्रधानोव्ययीभावः उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः उभयपदार्थप्रधानो
द्वंद्वः नचात्रपूर्वपदार्थप्राधान्यं गम्यते अन्यपदार्थमाक्षिपतीतत्पुरुषस्तिस्तु तत्पुरुषविष्यतिविप्रतिषेधेनसमनेरेकत्वं ग्रामसिकारणि दं ॥ पा
कार्यं तेनानुसमिध्यति ॥ अव्ययीभावश्चापीभावः प्रत्येकांकार्यस्याप्यनुमतः प्राप्नोति ॥ पुरस्कार्यं तेन नसंख्याकस्यनदीभिः समासात्स्यापी
भावोऽनुकूलः समासवप्रयोगकृत्याः सर्वसमकनदीतीरो ॥ इति श्रीमहाभाष्ये द्वितीयस्याध्यायस्य प्रथमे पादे द्वितीयमाह्निकं ॥ ॥ ॥

पूर्वं पात्रेसमितादयश्च ॥ उदीच्यादिकृदन्तेषु विधिसमासप्रत्ययकृत्तुपेनिसमासः प्राप्नोति ॥ पात्रेसमितादि क्रियाविशेषणं पात्रेसमितादि तुपारोत्त्यापाद ॥ एव
वं ॥ एककरात्त्रप्रसंगोनदीभिःक्षणमौकेवलाः स्यात्‌पितृमात्रहस्तकन्यादिर ॥ नवात्तेतिएकत्वादिरशेषणात्र पूर्वप्रधानं प्रतीयते ॥ अवशिष्टं भाष्येतत्रैकत्वात्
वा ॥ इतिश्री द्वितीयस्याध्यायस्य प्रथमेपादे द्वितीयमाह्निकं ॥

६२

तद्धिता [illegible] समाहार इति को [illegible] किं [illegible] समाहार [illegible] तद्धितार्थ [illegible]
[illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] इति [illegible]

तद्धिता [illegible] समाहार इति को [illegible] समाहार इति [illegible] समाहार [illegible]
[illegible] समाहार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] समाहारः ॥ ॥ ॥
[illegible]

[illegible] समाहार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] समाहार [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ॥ श्रीरामचंद्रः ॥

[illegible] ॥ ॥ ॥

पाणि [illegible] पितृमाह [illegible] एतं तद्दी [illegible] [illegible]

समासे [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] सतैव विपयतः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ॥

[illegible]

६०२ पाणिनीमंसमर्थं पिनमा [illegible]
मवचुमप्य [illegible]
प्रोतीति [illegible]

अयवायस्ना हवर्थं [illegible]
थं प्रिससाम [illegible]
दर्शित [illegible]
मा हारासम [illegible]
र्थ विमलिम [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

उत्तरपदप्रसंगेन विभक्तिमाह । द्वन्द्वेति [illegible] उत्तरपदे [illegible] पुंवद्भावो [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] बहुव्रीहौ [illegible] इति [illegible]

[illegible] बहुव्रीहि [illegible] द्विगो [illegible] उत्तरपद [illegible]

द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे [illegible] द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] उत्तरपदे [illegible]

[illegible] उत्तरपदे [illegible] द्विगोः [illegible] उत्तरपदे [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] द्विगौ [illegible] इति [illegible]

[illegible] द्विगुः [illegible] पुनरप्यत्र

[illegible] बहुव्रीहिः [illegible] उत्तरपद [illegible] बहुव्रीहि [illegible] उत्तरपदप्रति

[illegible]

[illegible] उत्तरपदप्रतिषेधे उत्तरपद इति [illegible] ॥

[illegible] उत्तरपदे [illegible] द्विगो [illegible] समासान्तः

। द्विगोः [illegible] द्विगुः [illegible] इति [illegible] इति [illegible] समासान्तो [illegible]

[illegible] बहुव्रीहौ [illegible] पुनः समासः [illegible] ॥ ॥

सर्वत्रशापपर्य [illegible]

[illegible]

सर्वत्रमत्र्यप्र [illegible] किंप्रयोजनं [illegible]

[illegible]

[illegible]

प. पी [illegible] ॥ ॥

इति [illegible]

[illegible] ॥ ॥ ॥

[illegible]

६८

०६० उपमानानि [illegible] नीति [illegible] किंपदेनोपमानमिति [illegible]
१५ [illegible]

[illegible]

उपमानानि [illegible] किंपदेनोपमान [illegible]

[illegible]

[illegible]

किंपुनरिति अर्थभाक् पतितश्लीत्यादि शास्त्राभेदस्तैते स्यामात्रोपितस्याके [illegible] प्राप्नोति [illegible]
[illegible] शास्त्रोक्ष्यामीति [illegible]
[illegible] किंपुनरिति [illegible] किमेतत् [illegible]
[illegible]
[illegible] गुण [illegible]

किंपुनरि [illegible] शास्त्रोक्ष्यामात् [illegible]
[illegible] ॥ ॥ ॥
[illegible] प्राप्नोति [illegible] ॥

[illegible] पतितहीति [illegible]
[illegible]
[illegible] प्राप्नोति [illegible] ततः [illegible]
[illegible] ॥ ॥
[illegible]

…र्कं १२ एवमपीति [illegible] मानेन [illegible] यदि [illegible] चंद्रमसो [illegible] भागः

१६ म [illegible] तन्मेव [illegible]

[illegible] पृथ्वीका [illegible]

[illegible]

[illegible] पठितत्वादिति [illegible]

एवमपि [illegible] भवति [illegible] चंद्रमसो [illegible]

[illegible] इति [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] एवमपि [illegible] ॥ ॥

[illegible]

[illegible] इति [illegible] ॥ पादितावदिति [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

उपमितं व्याघ्रादिभिः॥ पुरुषो व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः [illegible] सामान्याप्रयोगे [illegible] पुरुषव्याघ्र [illegible]
[illegible]
[illegible] पुरुषो व्याघ्र इव [illegible]

उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे॥ [illegible] पुरुषोऽयं व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः पुरुषो व्याघ्र इव [illegible] सामान्याप्रयोग इति [illegible]
पुरुषो व्याघ्र इव शूरः पुरुषो सिंह इव [illegible] सामान्याप्रयोग [illegible]
[illegible]
[illegible] विशेषणं [illegible] विशेष्य [illegible]
[illegible]
[illegible] विशेषणं विशेष्येण [illegible] ॥ ॥

[illegible] विशेषणं विशेष्येण [illegible] विशेषण [illegible]
[illegible]
[illegible] विशेषणं [illegible] ॥

कथं तर्हि [illegible]

कथं तर्हि [illegible]
[illegible] ॥ ॥

[illegible]

पर्व्वो॥ अथ किमर्थं [illegible]

[illegible]॥ अथ किमर्थं [illegible]

अथ वर्णानं॥ ॥

[illegible]

[illegible]॥

श्रोणपारमः ॥ श्रोणपारमइति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥

[illegible] ॥

कै॰ ८०

अथ धारणीमज्ञानेन [illegible] ॥ [illegible] कृताय कृतं [illegible]

[illegible] ॥

अथ धारणीमज्ञानेन [illegible] कृताय कृता [illegible] संख्यानं ॥ कृताय कृ
ता [illegible] ॥ कृताय कृतं [illegible]
तं [illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दीपवृत्ति ॥

[illegible] ॥ ॥

[illegible]

भा॰ कौ॰ फलं प्रति शब्दस्य [illegible] ॥ [illegible]

७२ [illegible] आतिशायिक [illegible]

[illegible] आतिशायिकाद्दृष्टादृष्टः [illegible] आतिशायिक [illegible]

[illegible] आतिशायिक [illegible]

प्रतिषेध [illegible] प्रतिषेधः [illegible] आतिशायिक [illegible]

[illegible] आतिशायिकः [illegible] आतिशायिक [illegible] आतिशायिको [illegible]

[illegible] आतिशायिकः [illegible]

[illegible] आतिशायिकः [illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] प्रतिपादयतु [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
शापि कुः॥ ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥

पदुक्तं हुश्रीटीकतेपव्याख्यातनिशापिकः त्रिभ्य रतिकव्याह कर्पापुनरी त्रिः अतिशयेनाल्पत्वात् इतिनुहुश्रीहेः प्रत्ययोस्मिपाणोन स्वल्पत्वोत्पन्न प्रकर्षैकपप्रत्ययप
र्यं प्रकर्षः स्वात्तिसर्वाः । अतोत्रलैनाप्यपे तिसर्त्रैवपकः प्रत्ययो विधीयतेतरर्यं व्याव्याः प्रकर्षोभ्यासंस्यतपवम कर्षव्याश्रीयतेप चोर्ल द्व्यव्यापस्यापदेश्य सप्रमाप

कर्पापुनरम्प प्रकर्षोतिभ्यम्य प्रकर्षः स्यात्तेना म्यल्प प्रकर्षो तात्पर्यप्रकर्षेणाम्य नितर्यं प्रचोवर्णेन त्रिपुपनतेवत्स्यात्तिविनस्या निपर्यंगुणोपिप्पिपततेमस्पत
रातिहिनेप्पुपिताना आतिपायि कः प्राप्नोतिकिंकारणेगुणस्य नादिस्यातेन वृद्धमाप्नोपि तात्वनतः नपालाद्युपगात्वनतः कर्पं अव्रतन्वा चरिणविप्ति अ
प्यतेहन्वा पर्या पो हुतोपदुणवतन हन्वा चा पापनक्वीपः प्रवर्ति तद्धश्रीहीत इणामविना नप्रविनतपप्याभ्यूर्कृताप्त प्रमाप्तप्रपोदिहिनो एकोणानः प्रपीत्वीविर
त द्वुणा आपी पततन्दुण्य अप्रसर्तते॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तार्थतेगुणः शेदको अपरे आख्यातप्रकर्पा विपीयते इतिएवनुपवासीप्रकर्षद्रसर्य पपप्पत्राव पांतवलनिगुणाप्रकर्षेत चापिपत्रपचामेकत सेपमतिन त्रतपापकत
आश्री पहोणपाप नवाहतिनाना नादिगुणम्य नवाहवेतिवोद्धपत्ता पोत्रप्रकतम्या तस्मात्गुणा पेत्र प्रकर्षे संभवातिन प्रमाणेप्पाप्ति सीतंदुक्तंश्रुतहन्वा पर्यं तित्न
प्रहस्मा पर्यं स्यापि पुमान्नत्यास कर्षसंभवता॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥
[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥

श्री केदार [illegible]